नाभस योग

डॉ. सीमा शर्मा

भारतीय ज्योतिष में चन्द्र से, लग्न से, सूर्य से अनेक प्रकार के योगों का उल्लेख है। इनके अतिरिक्त आकाश में ग्रह-स्थिति से विशेष आकृति बनने से इन योगों को नाभस योग कहा जाता है। यवनाचार्यों ने इनकी संख्या १८०० बताई हैं, किन्तु श्री कल्याण वर्मा के अनुसार ऐसे कुल ३२ योगों का निर्माण होता हैं। वास्तव में जो १८०० की संख्या हैं वह सम्मिश्रण एवं भेद प्रस्तार से बनते हैं।

नाभस योग जो संख्या में कुल ३२ हैं को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है। प्रथम आकाश में ग्रह-स्थिति से विशेष आकृति के कारण बनने वाले योगों को 'आकृति योग' कहा गया हैं जो कि कुल २० हैं। द्वितीय श्रेणी में राशि संख्या के अनुसार बनने वाले योग हैं जिन्हें 'संख्या योग' कहा गया है जो कि कुल संख्या में सात योग है। तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी में ३ आश्रय योग एवं २ दल योग होते हैं, जो कुल मिलाकर ३२ योग हो जाते हैं। नाभस योगों में राहु-केतु की गणना नहीं की जाती अर्थात् केवल सूर्य से शनि पर्यन्त सात ग्रहों को ही मान्यता दी गई है। इन योगों के नाम इस प्रकार है -

१. **आकृति योग** -: नौका योग, कूट योग, छत्र योग, चाप योग(धनुर्योग), यूप योग, शर योग, शक्ति योग, दण्ड योग, कमल योग, वाणी योग, शकट योग, अर्धचन्द्र योग, गदा योग, वज्र योग, यव योग, विह्ल योग, हल योग, श्रृगाटक योग, चक्र योग एवं समुद्र योग।

२. **संख्या योग** -: गोल, युग, शूल, केदार, पाश, दामिना व वीणा योग।

३. **आश्रय-योग** -: जल, मुसल एवं रज्जु योग।

४. **दल योग** -: सर्प योग एवं माला योग।

नाभस योग किस प्रकार से बनते हैं एवं इनके क्या फल होते हैं, यह जानना अति आवश्यक हैं क्योंकि उक्त ३२ योगों में ही सम्पूर्ण चराचर का जन्म होता है अर्थात् प्रत्येक कुंडली मे इन योगों में से कोई एक योग अवश्य होता हैं। इन योगों का प्रभाव जीवन पर्यन्त सभी दशाओं में रहता है अतः इनका विचार फलित-ज्योतिष में अवश्य करना चाहिए।

आकृति योग -: श्री कल्याण वर्मा के अनुसार नाभस योगों का फल इस प्रकार से है।

१. **नौका योग** -: यदि कुण्डली में लग्न से शुरु करके लगातार सात राशियों में (सप्तम भाव तक) सारे ग्रह सूर्य से शनि तक हो तो नौका योग होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति पानी के माध्यम से या समुद्री यात्रा से जीवन-यापन करने वाला, प्रसिद्धि, वैभव अर्जित करने वाला, धनवान, ताकतवर लेकिन कंजूस या चंचलमति वाला होता है।

२. **कूट योग** –: यदि कुण्डली में चतुर्थ भाव से शुरु होकर लगातार सात राशियों में दशम भाव तक सातों ग्रह हों तो कूट योग होता है। यदि जातक का जन्म इस योग में हो तो जातक झूठा व्यवहार करने वाला, धोखेबाज, दूसरों के काम न आने वाला, क्रूर स्वभाव वाला होता है।

३. **छत्र योग** –: यदि कुण्डली में सप्तम भाव से शुरु होकर लग्न तक लगातार सात राशियों में सभी सात ग्रह हो छत्र योग बनता है। इस योग के प्रभाव से जातक दानी, दयालु, राजप्रिय, कुशाग्र बुद्धि वाला एवं ऊँचे विचारों वाला होता है।

४. **चाप योग** –: यदि जन्म कुण्डली में दशम भाव से प्रारम्भ होकर चतुर्थ भाव तक लगातार सात राशियों में सातों ग्रह हों तो चाप योग का निर्माण होता है।

५. **यूप योग** –: लग्न से शुरु होकर चतुर्थ भाव तक सभी सात ग्रह हों तो यूप योग होता है। इस योग में जन्मा व्यक्ति त्यागी, धन-सुख से सम्पन्न व सत्य पारायण होता है।

६. **शर योग** –: चतुर्थ से सप्तम भाव तक लगातार सभी सात ग्रह हों तो शर योग होता है। इस योग के कारण जातक शस्त्र, हथियार बनाने वाला, वन प्रदेशों की यात्रा का शौकीन, अत्यधिक उत्तेजित होने वाला, हिंसक प्रवृत्ति वाला होता है।

७. **शक्ति योग** –: सप्तम से दशम भाव तक लगातार सभी सात ग्रह हों तो शक्ति योग बनता है। इस योग के कारण जातक धन-हीन, दु:खी, आलसी लेकिन संग्रामादि में निपुण एवं स्थिर विचारों वाला एवं सर्वप्रिय होता है।

८. **दण्ड योग** –: दशम से लग्न तक लगातार सभी सात ग्रह होने पर दण्ड योग का निर्माण होता है। दण्ड योग में उत्पन्न व्यक्ति धन-हीन, दु:खी, अन्य लोगों द्वारा अपमानित, अपने लोगों द्वारा परित्यक्त होता है।

९. **अर्धचन्द्र योग** –: केन्द्र स्थानों को छोडकर अन्य किसी भी स्थान से शुरु होकर लगातार सात राशियों में ग्रह हो तो अर्धचन्द्र योग बनता है। इस योग के होने से जातक सौभाग्यशाली, सुंदर शरीर वाला, धनवान व राजा का प्रिय होता है।

१०. **गदा योग** –: आस-पास के दो केन्द्र अर्थात् लग्न-चतुर्थ, लग्न-दशम, सप्तम-चतुर्थया-सप्तम-दशम भाव में सभी सात ग्रह हो तो गदा योग होता है। इस योग के प्रभाव से जातक शास्त्रों में कुशल, यज्ञकर्ता, स्वाभिमान की रक्षा करने वाला, धन,स्वर्ण एवं रत्न आदि से युक्त होता है।

११. **वज्र योग** –: लग्न एवं सप्तम भाव से शुभ ग्रह एवं चतुर्थ व दशम में पापग्रह हों तो वज्र योग बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति आयु के मध्यावस्था में दु:खी, निरोगी, लोकप्रिय लेकिन भाग्यहीन होता है।

१२. **यव योग** -: लग्न व सप्तम भाव में पापग्रह एवं चतुर्थ व दशम भाव में शुभ ग्रह हों तो यव योग बनता है। यव योग में उत्पन्न व्यक्ति नियम से रहने वाला, मंगलमय आचरण वाला, मध्यमावस्था में धन व सुख से युक्त, दानी एवं धनी होता है।

१३. **कमल योग** -: चारों केन्द्रों में शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध व अधिक कलायुक्त चन्द्र) स्थित हो, सूर्य यथासंभव कहीं भी रह सकते हैं तब कमल योग का निर्माण होता है। कमल योग के प्रभाव से जातक यशस्वी, दीर्घायु, सम्पत्तियुक्त, सुंदर व बहुत भूमि का स्वामि होता है।

१४. **वाणी योग** -: सभी शुभग्रह (उपरोक्तानुसार) पडाकर में या आपोल्किम में हों तो वाणी योग बनता है। इसके प्रभाव से जातक सम्पत्ति एकत्र, संचय करने में निपुण, स्थिर सुख व स्थिर धन से युक्त एवं पुत्र सुख से उत्पन्न होता है।

१५. **शकट योग** -: लग्न एवं सप्तम भाव में सभी सूर्य से शनि तक सातों ग्रह हों तो शकट योग का निर्माण होता है। इस योग के जातक रोगी, खराब स्त्री वाला, धनहीन, गाड़ी से जीविका चलाने वाला होता है।

१६. **विह्ग (पक्षी) योग** -: चतुर्थ एवं दशम में समस्त ग्रह हों तो विह्ग योग होता है। इसके प्रभाव से जातक घूमने वाला, दूत कार्य करने वाला, कलह प्रिय होता है।

१७. **श्रृगाटक योग** -: लग्न पंचम व नवम अर्थात् सभी ग्रह त्रिकोण में हों तो श्रृगाटक योग बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति बुद्धि में साहस दिखाने वाला, लोकप्रिय धनवान, सुखी किन्तु स्त्रियों से द्वेष करने वाला होता है।

१८. **हल योग** -: लग्न के अतिरिक्त किसी भी स्थान से प्रारम्भ होकर सभी ग्रह परस्पर त्रिकोण में हों तो हल योग बनता है। इसके प्रभाव से जातक बहुत खाने वाला, दरिद्र दुखी रहने वाला किसान होता है।

१९. **चक्र योग** -: लग्न से प्रारम्भ होकर 1-1 राशी छोडकर यदि 6 राशियों में सब ग्रहों अर्थात् 1-3-5-7-9-11 भावों में सभी सात ग्रह स्थित हो तो चक्र योग बनता है। इस योग के प्रभाव से जातक बड़ा राजा होता है। इसके सामने सभी सिर झुकाते हैं अर्थात् सर्वसमर्थ राजा के समान होता है।

२०. **समुद्र योग** -: द्वितीय भाव से प्रारम्भ होकर 1-1 राशी छोडकर यदि 6 राशियों में सब ग्रह हो अर्थात् 2-4-6-8-10-12 भावों में सभी सात ग्रह स्थित हो तो समुद्र योग बनता है। इसके प्रभाव से जातक बहुधनी, सम्पत्ति के भोगों से युक्त, लोकप्रिय व मानसिक सन्तुलन वाले होते है।

संख्या योग -: उपरोक्त बीस आकृत्ति योगों के बाद सात संख्या योग होते हैं जो कि पूर्णतः संख्या पर ही आधारित है, वे सातों निम्न है -

१. सभी सातों ग्रह यदि एक राशि में हों तो गोल योग बनता है इसके प्रभाव से जातक दरिद्री, आलसी, विद्या व मान-सम्मान से रहित, दु:खी व दीन होता है।

२. सभी ग्रह यदि दो राशियों में होते हों तो युग नामक योग होता है। इसके जातक पाखण्डी धनहीन, लोक द्वारा बहिष्कृत, धर्म व सम्मान से रहित होता है।

३. तीन राशियों में सभी ग्रह हों तो शूल योग होता है, इससे जातक तीखे स्वभाव का हिंसक, आलसी, क्रोधी लेकिन बहादूर, युद्ध में प्रशंसा पाने वाला होता है।

४. सभी सात ग्रह यदि चार राशियों में हों तो केदार योग बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति सत्यवादी, सुखी, चंचल स्वभाव का एवं बहुत से कार्यों में उपयोगी होता है।

५. पाँच राशियों में सभी ग्रह हों तो पाश नामक योग बनता है। इस योग के प्रभाव से जातक दबाव में रहने वाला, कार्य में उत्साही, बहुत बोलने वाला एवं अनेक नौकरों वाला होता है।

६. छः राशियों में सभी ग्रह के होने से दामिनी योग बनता है। इसके प्रभाव से जातक उपकार करने वाला, धनाढ्य, विस्मित मति का, समृद्ध, धैर्यशाली व विद्वान होता है।

७. सात राशियों में सभी ग्रह स्थित हों तो वीणा योग होता है। इसके प्रभाव से जातक शास्त्रों में पारंगत, अच्छा वक्ता, सुखी, बहुत से नौकरों वाला एवं कीर्तिवान होता है।

आश्रय योग -

१. समस्त सातों ग्रह द्विस्वभाव राशि में होने से नल योग का निर्माण होता है। इस योग के प्रभाव से जातक धन का संचय करने वाला, निपुण बन्धुओं का हितकारी एवं किसी अङ्ग में न्यूनाधिकता वाले होते है।

२. समस्त ग्रह स्थिर राशियों में हों तो मुसलयोग बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति मान, धन व ज्ञान से युक्त, राजा के प्रिय व सदा काम में लगे रहने वाले होते हैं।

३. सभी सातों ग्रह चर राशियों में स्थित हों तो रज्जू योग बनता है। इसके प्रभाव से जातक घूमने का शौकीन, सुन्दर और परदेश में काम करने वाला होता है।

दल योग -

१. सभी पाप ग्रह चतुर्थ, (शनि व मंगल पाप ग्रह में आएंगे, बुध संगति भेद से एवं क्षीण चन्द्र पाप ग्रह में आएंगे। सप्तम व दशम भाव (तीन केन्द्रों में) हो तो सर्पयोग बनता है। इस के प्रभाव से जातक मिश्रित स्वभाव वाला, दरिद्र, क्रूर व दीन होते है।

२. सभी शुभ ग्रह उपरोक्तानुसार तीन केन्द्रों में स्थित हों तो माला योग होता है। इसके प्रभाव से जातक सुखी, वाहन, वस्त्र व धन से व्याप्त, सुन्दर व कई स्त्रीयों वाला होता है।

ज्योतिषाचार्य (लब्धस्वर्णपदक),
टी.जी.टी. संस्कृत अध्यापिका, दिल्ली सरकार